

प्रेषक,

भास्करानन्द,
सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

जिलाधिकारी,
टिहरी गढ़वाल।

राजस्व अनुमान-2

देहरादून: दिनांक २० फरवरी, 2014

विषय:- मैं ० ३के० इन्टरनेशनल प्रॉलिंगो को ग्राम काण्डी बंगलों की पट्टी छैजुला, तहसील धनोल्टी जनपद टिहरी गढ़वाल में पर्यटन प्रयोजनार्थ (इको टूरिज्म एवं रिजार्ट की स्थापना) हेतु ०.३७६ है० भूमि क्य की अनुमति प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या-2384/5-06(2012-13) दिनांक 27.08.2013 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल, मैं ० ३के० इन्टरनेशनल प्रॉलिंगो को ग्राम काण्डी बंगलों की पट्टी छैजुला, तहसील धनोल्टी जनपद टिहरी गढ़वाल में पर्यटन प्रयोजनार्थ (इको टूरिज्म एवं रिजार्ट की स्थापना) हेतु ०.३७६ है० भूमि क्य की अनुमति, उत्तराखण्ड (उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (संशोधन) अधिनियम, 2003 की धारा-154(4)(3)(क)(II) के अन्तर्गत आपके उपरोक्त पत्र द्वारा संस्तुत/अनुमोदित खसरा संख्याओं के अनुसार निम्नलिखित शर्तों/प्रतिबन्धों के साथ प्रदान करते हैं:-

1- केता धारा-129-ख के अधीन विशेष श्रेणी का भूमिधर बना रहेगा और ऐसा भूमिधर भविष्य में केवल राज्य सरकार या जिले के कलैक्टर, जैसी भी स्थिति हो, की अनुमति से ही भूमि क्य करने के लिये अर्ह होगा।

2- केता द्वारा क्य की गयी भूमि का उपयोग दो वर्ष की अवधि के अन्दर, जिसकी गणना भूमि के विक्रय विलेख के पंजीकरण की तिथि से की जायेगी अथवा उसके बाद ऐसी अवधि के अन्दर जिसको राज्य सरकार द्वारा ऐसे कारणों से जिन्हें लिखित रूप में अभिलिखित किया जायेगा, उसी प्रयोजन (इको टूरिज्म एवं रिजार्ट की स्थापना) के लिये करेगा जिसके लिये अनुज्ञा प्रदान की गयी है। यदि वह ऐसा नहीं करता अथवा उस भूमि का उपयोग जिसके लिये उसे स्वीकृत किया गया था, उससे भिन्न प्रयोजन के लिये विक्रय, उपहार या अन्यथा भूमि का अन्तरण करता है तो ऐसा अन्तरण उक्त अधिनियम के प्रयोजन हेतु शून्य हो जायेगा और धारा-167 के परिणाम लागू होंगे।

3- जिस भूमि का संकरण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी अनुसूचित जनजाति के न हों और अनुसूचित जाति के भूमिधर होने की स्थिति में भूमि क्य से पूर्व सम्बन्धित जिलाधिकारी से नियमानुसार अनुमति प्राप्त की जायेगी।

- 4— जिस भूमि का संकरण प्रस्तावित है उसके भूस्वामी असंक्रमणीय अधिकार वाले भूमिधरन हों।
- 5— शासन द्वारा द गई भूमि क्य की अनुमति शासनादेश निर्गत होने की तिथि से 180 दिन तक वैध रहेगी।
- 6— यदि भूमि नदी नाले के निकट है व भविष्य में Flood Plain Zoning या अन्य आधार पर आपदा की दृष्टि संवेदनशील चिह्नित की जाती है तब आवश्यकतानुरूप प्रस्तावित इकाई के भूमि/सम्पत्ति के बच्चा में जारी आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।
- 7— जिलाधिकारी है व अपने स्तर से यह सुनिश्चित कर लिया जायेगा कि क्य हेतु प्रस्तावित भूमि, समस्त वर्जनाओं से विमुक्त है तथा सम्बन्धित भूमि अथवा उसका कोई भी अंश अनुसूचित जाति/जनजाति के वित्तियों से सम्बन्धित नहीं है अर्थात् प्रश्नगत भूमि क्य में किसी भूमि सम्बन्धी कानून विनियोग वा उल्लंघन नहीं होता है।
- 8— सम्बन्धित क्षेत्र/भूमि की भूगर्भिकृदशा एवं परियोजना के अन्तर्गत किये जाने वाले निर्माण के पर्यावर्णीय प्रभाव के प्रयायन/आंकलन के सम्बन्ध में नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।
- 9— सम्बन्धित भूमि उस पर प्रस्तावित निर्माण के सन्दर्भ में वन संरक्षण अधिनियम/वन्य जीव संरक्षण अधिनियम एफ0ए0आर0 लॉट्स, सीलिंग एकट अथवा अन्य कोई अधिनियम/नियम लागू होने वा प्रदूषण नियन्त्रण सम्बन्धी किन्ही विनियमों के परिप्रेक्ष्य में वांछित कार्यवाही/अनुपालन व विभिन्न निवेशक द्वारा अपने स्तर से सुनिश्चित किया जायेगा।
- 10— परियोजना प्रस्ताव में दर्शित इकाई के डिजाइन, आकार/प्रकार, निवेश, सीमा, निर्माण अवधि एवं अन्य संगत प्राविधानों/अधिकथनों का निवेशक द्वारा अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।
- 11— स्थापित की जाने वाली पर्यटन इकाई में स्थानीय युवकों/बेरोजगारों को रोजगार दिया जायेगा।
- 12— परियोजना में रेलवे टार्मिनल/हार्डस्टोर का उपयोग एवं पार्किंग हेतु पर्याप्त स्थान की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जायें।
- 13— इकाई द्वारा यह सुनिश्चित कर लिया जायेगा कि पर्यटन इकाई की स्थापना से इकाई द्वारा जल व अन्य स्थानीय संसाधनों का उपयोग करने में स्थानीय समुदाय/पंचायत को कोई आपत्ति न हो।
- 14— आवेदक द्वारा दिए गए संगलन हेतु सराय एकट में निहित प्राविधानों एवं उत्तराखण्ड सरकार द्वारा निर्दिष्ट विभिन्न नियमों/शर्तों का पूर्णतः पालन किया जायेगा तथा प्रस्तावित स्थल पर प्रस्तावित योजना के द्वारा निर्माण किया जायेगा तथा किसी भी प्रकार की सरकारी भूमियां या अन्य निजी भूमि पर इकाई द्वारा अतिक्रमण नहीं किया जायेगा।

2/1

- 15— सम्बन्धित आवेदक द्वारा भू-उपयोग करने से पूर्व सक्षम एजेन्सी (विनियमित क्षेत्र प्राधिकरण/विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण/विकास प्राधिकरण) से नियमानुसार अनापत्ति प्राप्त करनी होगी तभी वह भूमि का उपयोग निर्धारित कार्य हेतु कर सकेंगे।
- 16— किसी भी दशा में प्रस्तावित केताओं को प्रस्तावित भूमि के अतिरिक्त अन्य भूमि के उपयोग की अनुमति नहीं होगी, एवं सार्वजनिक उपयोग की भूमि या अन्य कोई भूमि पर कब्जा न हो इसके लिये भूमि क्य के तत्काल बाद उसका सीमांकन कर लिया जाए।
- 17— भूमि का विक्य अपरिहार्य परिस्थितियों के अतिरिक्त अनुमन्य नहीं होगा एवं ऐसी दशा में विक्य किये जाने हेतु सकारण शासन का अनुमोदन प्राप्त करना होगा।
- 18— योजना प्रारम्भ करने से पूर्व नियमानुसार सम्बन्धित विभागों/संस्थाओं से विधिक व अन्य अनापत्तियां/स्वीकृतियां प्राप्त कर ली जायेगी।
- 19— उपरोक्त शर्तों/प्रतिबन्धों का उल्लंघन होने पर अथवा किसी अन्य कारणों से, जिसे शासन उचित समझता हो, प्रश्नगत स्वीकृति निरस्त कर दी जायेगी।

कृपया तदनुसार आवश्यक कार्यवाही करते हुए इस शासनादेश की शर्तों की अनुपालन स्थिति से भी यथा समय पर शासन को अवगत कराने का कष्ट करें।

मवदीय,

(भास्करानन्द)
सचिव।

पृष्ठ सं-133 / समिनांकित / 2014

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

- 1— सचिव, पर्यटन विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- 2— आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद, उत्तराखण्ड, देहरादून।
- 3— आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी।
- 4— श्री शरद कुकरेती, प्राधिकृत हस्ताक्षरी, मै0 बी0आर0 राधा इन्टरनेशनल प्राइलि0, 10 ओल्ड सर्वे रोड, देहरादून।
- 5— निदेशक एन0आई0सी0, सचिवालय परिसर, देहरादून।
- 6— प्रभारी, मीडिया सेन्टर उत्तराखण्ड सचिवालय, देहरादून।
- 7— गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(संतोष बडोनी)
अनुसचिव।